अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

महातपस्वी महाश्रमण दक्षिण भारत के प्रमुख व्यापारिक शहर कोच्चि में

-चिलचिलाती धूप और गर्मी के बीच आचार्यश्री ने किया लगभग चैदह कि.मी. का विहार

-शहर के इडापल्ली क्षेत्र के भण्डारी हाउस में हुआ मंगल पदार्पण

-आस्तिक जीवन जीने की आचार्यश्री ने दी पावन प्रेरणा

01.03.2019 इडापल्ली, कोच्चि, एर्नाकुलम (केरल): सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति जैसे मंगलकारी संदेशों के साथ केरल की धरती पर अपनी अहिंसा यात्रा के साथ गतिमान अहिंसा यात्रा प्रणेता, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने केरल राज्य के एर्नाकुलम जिले का नहीं, अपितु दक्षिण भारत के प्रमुख व्यापारिक शहर कोच्चि की सीमा में शुक्रवार को मंगल प्रवेश किया। आचार्यश्री का पावन चरणरज पाकर मानों यह शहर निहाल हो उठा।

केरल राज्य का कोच्चि शहर मुख्यतया मसालों के व्यापार के लिए जाना जाता है। हालांकि यह शहर भारत का प्रमुख बंदरगाह भी है। अरब सागर के किनारे अवस्थित यह शहर दक्षिण भारत में व्यापार करने की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यह शहर स्वच्छता और सुन्दरता के लिए भी प्रसिद्ध है। यहां अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम भी है। जहां मुख्यतया फुटबाल और क्रिकेट मैच आयोजित होते हैं।

शुक्रवार को आचार्यश्री ने अलुवा से मंगल प्रस्थान किया। रोज की आचार्यश्री के बढ़ते कदमों के साथ आसमान में ऊपर चढ़ते सूर्य की प्रखरता निरंतर बढ़ती जा रही थी, किन्तु दृढ़ संकल्पी आचार्यश्री भी अपनी संकल्पशक्ति के साथ समत्व भाव से मानव कल्याण के लिए गतिमान थे। कुछ किलोमीटर के बाद ही आचार्यश्री ने कोच्चि शहर की सीमा में पावन प्रवेश किया। आज का विहार मार्ग प्रायः मेट्रो ब्रिज के नीचे अवस्थित राजमार्ग पर हो रहा था। ऊपर से गुजरती मेट्रो और राजमार्ग पर तेजी से भागते वाहनों की बहुलता शहर में होने का अहसास करा रहे थे। ऊंची इमारतों और होर्डिंग्स का तो मानों जाल-सा बिछा हुआ था। वाहनों से गुजरते लोग आचार्यश्री के कारवां को आश्चर्यचकित रूप में निहार रहे थे। प्रवास स्थल से कुछ दूरी पर उपस्थित श्रद्धालुओं ने पारंपरिक वाद्ययंत्रों के साथ आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया। आचार्यश्री इडापल्ली स्थित भण्डारी हाउस में पधारे। आचार्यश्री के आगमन से उल्लसित परिवार मानों फूले नहीं समां रहा था।

हाउस परिसर में आयोजित मंगल प्रवचन में आचार्यश्री ने उपस्थित श्रद्धालुओं को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि जीवन में आत्मा और शरीर दो तत्त्वों का योग होता है। केवल आत्मा हो तो जीवन की परिकल्पना नहीं की जा सकती और केवल शरीर हो तो भी जीवन की परिकल्पना नहीं की जा सकती। आत्मा और शरीर का योग होना जीवन और आत्मा का शरीर से अलग हो जाना मृत्यु है। आत्मा और शरीर दोनों अलग-अलग है। आत्मा स्थाई है और शरीर अस्थाई है। आत्मा आगे जाने वाली है। उसके साथ धन-दौलत नहीं, बल्कि उसके साथ पाप-पुण्य जाने वाले हैं। इसलिए आदमी को चोरी, झूठ और ठगी से बचने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को आस्तिक जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए और अपनी आत्मा के कल्याण का प्रयास करना चाहिए। आदमी के जीवन में सच्चाई, ईमानदारी और धार्मिकता का प्रभाव हो तो वर्तमान जीवन अच्छा हो सकता है और आगे का जीवन भी अच्छा हो सकता है। अपनी आत्मा का उत्थान हो, आदमी को ऐसा प्रयास करना चाहिए।

आचार्यश्री के आगमन से उत्साहित श्री रणजीत भण्डारी, श्री विनोद सुराणा, श्री सुभाष सुराणा, सुश्री खुशबू भण्डारी और सुश्री दीपिका भण्डारी ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। भण्डारी परिवार की कन्याओं ने स्वागत गीत का संगान कर आचार्यश्री से पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।